'कांतार' में अभिव्यक्त तुलु लोक संस्कृति की झलक

डॉ. ज्योति ज्ञानेश्वरी

"फिल्म मनोरंजन का उत्तम माध्यम है लेकिन वह ज्ञानवर्द्धन के लिए भी अत्यंत बेहतरीन माध्यम है।"

\- दादा साहेब फाल्के

शोध सार:

लोक साहित्य किसी भी समाज की सामूहिक चेतना, आस्था और सांस्कृतिक विरासत की कलात्मक अभिव्यक्ति है। यह परंपराएं स्वाभाविक रूप से हर समुदाय में विकसित होती हैं और उनकी जीवन पद्धति का प्रतिबिंब प्रस्तुत करती हैं। इसी प्रकार, सिनेमा एक प्रभावशाली दृश्य-माध्यम है, जो न केवल मनोरंजन का साधन है बल्कि सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का भी सशक्त मंच बन चुका है। विशेषकर क्षेत्रीय सिनेमा में, लोक संस्कृति के विविध रूपों को व्यापक स्तर पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। 'कांतारा' (2022) कन्नड़ भाषा की एक ऐसी ही फिल्म है, जिसमें तटीय कर्नाटक की तुलु लोक संस्कृति का जीवंत और गहन चित्रण हुआ है। यह शोध-लेख 'कांतारा' फिल्म के माध्यम से अभिव्यक्त तुलु लोक विश्वासों, अनुष्ठानों एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

मूल शब्द: सिनेमा, तुलु संस्कृति, कर्नाटक, कांतारा, लोक परंपरा

भारतीय सिनेमा के जन्मदाता दादा साहेब फाल्के ने सन 1919 में एक भेंटवार्ता में उपर्यक्त बात को कहा था। साधारण-सी लगनेवाली इस बात पर गहराई से विचार किया जाए तो यह ज्ञात होता है कि भारतीय सिनेमा मनोरंजन और ज्ञानवर्द्धन पर टिका हुआ है। भारत मे सन 1896 को फांस के लुमियेर भाईयों ने मुबई में 'एरावल आफ दी ट्रेन' नामक सिनेमा का प्रदर्शन किया जो भारत में प्रदर्शित पहला सिनेमा है। भारत में सिनेमा का निर्माण सन 1912 में हुआ था। भारत में सन 1913 को 'राजा हरिश्चंद्र' नामक सिनेमा का निर्माण दादा सहेब पाल्के ने किया, जो भारत में निर्मित पहला सिनेमा था। इसलिए दादा सहेब पाल्के को भारतीय सिनेमा का पिता महा कहा जाता है। पहले मूक फिल्म ही बनता था। उन्नत प्रोद्योगिकी के कारण सिनेमा में धीरे-धीरे शब्दों को जोडने का प्रयास शुरु हुआ और वाक फिल्मों का निर्माण होने लगा। सन 1931 में बोलती फिल्मे जैसे 'आलम आरा'

और तेलुगु भाषा में 'भक्त प्रह्लाद' तथा तमिल में 'कालीदास' नामक फिल्म बनी तो सिनेमा का दुसरा उत्यान शुरू हो गया।

कर्नाटक में सिनेमा विधा का आरंभ सन 1928 में गुब्बी विराण्णा ने किया था। उन्होंनें सन 1928 में 'हरिमाया' नामक फिल्म बनाया था, लेकिन वह पूर्ण स्वरूप का सिनेमा नहीं बना। सन 1931 में मोहन भवनानी ने 'वसंता सेना' नाम का मूक सिनेमा बनाया था। कमला देवी चट्टोपद्याय और टी.पी कैलासम 'वसंता सेन' सिनेमा के अभिनेता थे। 'सती सुलोचना' कन्नड भाषा में निर्मित पहला वाक सिनेमा था। डा. सिवराम कारंत ने भी 'डेविल ल्यांड' और 'डोमिंगो' नामक मूक सिनेमाओं का निर्माण किया था।

कर्नाटक के दक्षिण-पश्चिम तटीय क्षेत्र को 'तुलुनाडु' के नाम से जाना जाता है, जो सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध और विशिष्ट भूभाग है। यह क्षेत्र मुख्यतः दक्षिण कन्नड़ और उडुपी जिलों में फैला है, और यहाँ की प्रमुख भाषा 'तुलु' है। तुलुनाडु की संस्कृति में लोक विश्वासों, अनुष्ठानों, नृत्य-नाट्य परंपराओं और मातृसत्तात्मक सामाजिक संरचना की विशेष भूमिका रही है।

तुलु भाषा और संस्कृति ने रंगमंच के माध्यम से अपनी सशक्त उपस्थिति बनाई, और यही रंगमंच आगे चलकर तुलु सिनेमा की आधारशिला बना। तुलु सिनेमा का प्रारंभिक विकास तुलु नाटकों की लोकप्रियता और जनसमर्थन पर आधारित था। वर्ष 1971 में कोडवा समुदाय के एस.आर. राजन द्वारा निर्देशित 'एन्ना तंगडी' को तुलु भाषा की पहली फिल्म माना जाता है, जिसका प्रदर्शन मंगलूर के ज्योति सिनेमा में हुआ था। यह फिल्म तुलु रंगभूमि से जुड़े कलाकारों की सामूहिक प्रस्तुति थी और इसी ने तुलु सिनेमा के एक स्वतंत्र प्रवाह की शुरुआत की।

इसके बाद कई फिल्मों ने तुलु समाज के विभिन्न पहलुओं को केंद्र में रखकर विषयवस्तु प्रस्तुत की – जैसे 'बंगार पाटेलर' (जमींदारी व्यवस्था पर आधारित), 'मारी बले' (सामाजिक व्यवस्था के विरोध में)। इन फिल्मों में स्थानीय कलाकारों, भाषा, लोक विश्वासों और परंपराओं का प्रामाणिक चित्रण देखने को मिलता है।

तुलु सिनेमा की व्यापकता को इस बात से भी समझा जा सकता है कि बॉलीवुड के कई चर्चित कलाकार – जैसे ऐश्वर्या राय, शिल्पा शेट्टी, सुनील शेट्टी और रोहित शेट्टी – मूल रूप से तुलुनाडु से ही हैं। कन्नड़ सिनेमा में भी कई प्रमुख अभिनेता-निर्देशक जैसे रक्षित शेट्टी, ऋषभ शेट्टी, राज बी. शेट्टी, उपेंद्र आदि तुलु समुदाय से आते हैं।

इस पृष्ठभूमि ने 'कांतारा' जैसी फिल्मों को जन्म देने के लिए एक सशक्त सांस्कृतिक आधार प्रदान किया, जो तुलु संस्कृति के केवल बाह्य रूपों को ही नहीं, बल्कि उसके अंतर्निहित दार्शनिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण को भी सामने लाती है।

कर्नाटक के दक्षिण पश्चिम तटिय क्षेत्र तुलुनाडू के नाम से जाना जाता है। तुलुनाडू के प्रमुख शहरों में मंगलूर भी एक है। मंगलूर में सिनेमा का प्रदर्शन सबसे पहले मराठी फिल्म फोटोग्राफर हरिश्वंद्र सखाराम बटावाडेकार ने किया था। तुलु सिनेमा का जन्म नाटक की कोख से हुआ था। तुलु भाषा की अपनी सांस्कृतिक परिवेश है। अपना ही कला प्रकार है, जिनका मंचन तुलु नाटकों में हो रहा हैं। तुलु सिनेमा का निर्माण का कारण ही तुलु नाटक है। कोडवा समुदाय के एस.आर राजन ने तुलु कलाकारों के सहयोग से 'एन्ना तंगडी, नामक तुलु सिनेमा बनाया था, जिसका प्रदर्शन मंगलूर के ज्योति सिनेमा घर में दो सप्ताह तक हुआ था। इसके उपरांत तुलु रंगभूमि से संबंधित कई कलाकारों ने अनेक तुलु सिनेमाओं का निर्माण किया था। इस तरह तुलु सिनेमाओं की संख्या दिन-ब-दिन बढती जा रही है। स्यानीय कलाकारों ने यहाँ का परिवेश, संस्कृति को केंद्र में रखकर कई फिल्मों का निर्माण किया जैसे 'बंगार पटलेर' सिनेमा जो जमींदारी से संबंधित है तो सन 1996 में प्रदर्शित 'मारीबले' सिनेमा में प्रस्तुत व्यवस्था का विरोध दिखाई देता है।

तुलुवेर(तुलुनाडू के निवासी) देश विदेश में फैले हुए हैं। भारतीय सिनेमा के क्षेत्र में नजर दौडाएगें तो बालीहुड के ऎश्वर्य रै, शिल्पा शेट्टी, सुनील शेट्टी, मुद्दुबाबु शेट्टी (फैटर शेट्टी), रोहित शेट्टी जैसे दिग्ज कलाकार मूलतः तुलुनाडू के ही हैं। कन्नड सिनेमा के इतिहास को देखेंगे तो कन्नड की प्रसिद्ध अभिनेत्रियाँ जैसे कल्पना, लीलावती, जयमाला और सुप्रसिद्ध सिनेमा निर्देशक जैसे रक्षित शेट्टी, रिषभ शेट्टी, राज बी शेट्टी , उपेन्द्र आदि तुलु समुदाय के ही लोग हैं।

प्रत्येक भारतीय को अपनी संस्कृति पर गर्व होता है। वह अपने आचार-विचार के द्धारा अपनी संस्कृति का प्रदर्शन करता है। तुलुवा लोग भी इस बात से अलग नहीं है। कर्नाटक राज्य के तटीय क्षेत्र में स्थित अविभाजित दक्षिण कन्नड जिल्ला तुलुनाडू के नाम से जाना जाता है। इस जगह की उत्तपत्ति का रहस्य मिथक से जुडी हुई है। कहा जाता है कि ऋषी परशुराम ने पश्चिमी घाट के शीर्ष पर खडे होकर अपनी कुल्हाडी फेंककर भूमि को समुद्र से ऊपर उठा दिया था। वही भूमि तुलुनाडू है। तुलुनाडू का अपना सांस्कृतिक परिवेश है, जो तुलुवा लोगों (तुलुनाडू के निवासी) के आचार-विचार, भाषाओं और लोक कलाओं का

संगम है। यक्षगान, नागाराधने, कंबला (भैसों का दौड),पिलिऐसा (बाघ नृत्य), कोरी कट्टा (मुर्गीयों की लडाई) आदि तुलु संस्कृति का विविध रूप हैं।

'कांतारा' सन 2022 की भारतीय कन्नड भाषा की एक्शन रोचक सिनेमा है, जिसे ऋषभ शेट्टी ने लिखा और निर्देशित किया है। इस सिनेमा का नायक शिवा का किरदार स्वयं ऋषभ शेट्टी ने निभाया है। इस सिनेमा में कन्नड के प्रसिद्ध कलाकारों के साथ-साथ स्यानीय कलाकारों ने भी अभिनय किया है। इस सिनेमा को तटीय कर्नाटक के केराडी नामक स्थान में फिल्माया गया है। कांतारा सिनेमा को 70 वी राष्ट्रीया फिल्म पुरस्कार प्राप्त हुआ है। 'कांतार' सिनेमा कन्नड सिनेमा के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हुआ है।

'कांतार' सिनेमा का कथानक इस प्रकार है- एक राजा था, जिसके पास सर्वगुण संपन्न पत्नी, बच्चे, बडा-सा राज्य होने पर भी मन शांति नहीं था। सच्ची खुशी की खोज में वह यात्रा करते हुए जंगल में पहुँचता है। वह उसे पंर्जुली दैवा[1] का पत्थर मिलता है। वह पंर्जुली दैवा के आज्ञानुसार अपनी जमीन का एक बडा हिस्सा ग्रामीणों को दान के रूप में देता है। पंर्जुली दैवा उसे चेतावनी देती है कि उसके परिवारवाले और उत्तराधिकारियों को दान के रूप में दिये गये जमीन को कभी वापस नहीं लेना है। सन 1970 में राज के वंशज पंर्जुली कोला (दैव का सालाना पूजा) के समय दैवा से अपने पूर्वजो द्धारा दान में दिये गये जमीन को वापस माँगता है। दैवा उसे जमीन सौंपने से इनकार करती है। वह जमीन का फैसला करने के लिए अदालत में जाता है। भूमि के मामले पर दलील देने वह अदालत में जाता है, लेकिन अदालत की सीढियों पर राजा के उत्तराधिकारी की दिल का दौरा पडने से रहस्यमय तरीके से मृत्यु हो जाती है। देवेन्द्र सुद्दूर जो वर्तमान में राजा के वंशज है। वह दोहरी शख्शियत है। वह ग्रामीणों को उनकी भूमि वन आरक्षित क्षेत्र में परिर्वतन होने से बचाने का भ्रम फैलाता है। वास्तविकता में वह अपने पूर्वजो द्धारा ग्रामीणों को दिये हुए भूमि को हडपना चाहता है। मुरली जो वन अधिकारी है। शिवा इस गलत फहमी मे था कि मुरली उनके दैवा और गाँववालों को जंगल से बाहर निकाल देगा। इस वजह से मुरली और शिवा के बीच बार-बार झगडा होता है। मुरली वन आरक्षित नियमानुसार ग्रामीणों को उनकी भूमि दिलाने में सफल होता है। मुरली और शिवा के बीच का झगडा खतम होता है। फिर से गाँव में पंर्जुली कोला होता है। शिवा के बदन में पंर्जुली दैवा आता है और सबको दर्शन देता है। पंर्जुली दैवा मुरली और गाँववालो का हाथ मिलवाता



[1] तुलुनाडू में पूजे जानेवाले दैवों में एक है, जिस का चेहरा सुवर के रूप में और शरीर मनुष्य के रूप में है।

है यानि गाँव की सुरक्षा का भार दोनों पर डालता है। यह सिनेमा का अंतिम दृश्य है। कांतारा अर्थात रहस्यमय जंगल। पूरे फिल्म की कहानी जंगल से संबंधित है।

तुलुनाडू एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ देवता और दैवा (देवता का अंश जो मनुष्य रूप में धरती पर प्रकट हुआ था।) की पूजा होती है। तुलु संस्कृति में पर्यावरण का महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ के त्योहार जैसे नागपंचमी, कोला आदि में प्रकृति के विभिन्न अंगों की पूजा की जाती है। तुलु समुदाय में एक कहावत है- देवेर बुडुंडला दैवा बुडंदु अर्थात भागवान तो गलती के लिए माँफ कर सकते है लेकिन दैवा नहीं। तुलु समुदाय में दैवा पर असीम श्रृद्धा-भक्ति है। यहाँ के लोग अन्याय होने पर कानून से भी पहले दैवा के शरण में जाते है। कांतारा सिनेमा में इस बात का जिक्र हुआ है। गाँववालों को जब इस बात का पता चलता है कि देवेन्द्र सुट्टूर उनके जमीन को हडपना चाहता है । ऐसे संदर्भ में गाँववाले कानून की मदद लेने से पहले दैवा के शरण में जाते हैं। देवेन्द्र सुट्टूर के इस व्यवहार को देखकर शिव की माँ कहती है कि नम्मा दैवा पंर्जली निन्ननु बिडुदिल्ला अर्थात हमारे पंर्जली दैवा तुझे माँफ नहीं करेगी। भारत के पूर्व प्रधान मंत्री इंधीरा गाँधी ने सन 1969 में भूमि सुधार कानून लागू किया था। इस कानूनानुसार जमीन जोतनेवाला ही जमीन का मालिक होता है। कांतारा सिनेमा में एक दृश्य ऐसा है जिस में सन 1847 में राजा का पंर्जुली दैवा के आज्ञानुसार अपनी जमीन ग्रामीणों को दान देना। यह दृश्य भूमि सुधार कानून के तरफ ही इशरा करता है। तुलुनाडू के निवासियों को दैवा की आज्ञा कानून के समान हैं। तुलुनाडू के दैवाराधन में सर्वजना सुखिनो बवंतू ध्येय पर ध्यान दिया गया है। इस फिल्म में दैवाराधन से संबंधित कई विषय जैसे भंडारा ऐरूहुदु (दैवा का आभूषण, शस्त्र आदि की पूजा करके दैवास्थान में ले जाना), कोला नर्तक की मृत्यु होने पर उसके हाथ से कडा (सोने का कडा जिसे गाँववाले या दैवा के परिवारवाले दैव नर्तक के हाथ में डालते है।) निकालना आदि प्रथा का चित्रण हुआ है। सिनेमा में गुरुवा (शिवा का भाई) के मृत्यु के बाद उस के हाथ से कडा निकालते है। फिल्म के अंत में पंर्जुली दैवा वन अधिकारी और ग्रामीणों का हाथ मिलवाना यह भी मिल-जुलकर रहने का संदेश देता है। इस सिनेमा में तुलुनाडू की संस्कृति जैसे चिक्कामेला (लघु यक्षगान), कंबला (भैसो की दौड), कोरी कट्टा (मुर्गी की लडाई) आदि का चित्रण हुआ है। तुलुनाडू का लोग गीत जिसे स्थानीय भाषा में पाड्दना कहा जाता है, उसका भी प्रयोग इस सिनेमा में हुआ है। इस सिनेमा की यह खासियत है कि इस में कंबला के रेफरी का चरित्र और पाड्दना गायक आदि का अभिनय इन दोनो कलाओं से संबंधित कलाकारों से ही करवाया है, जिस के कारण इस सिनेमा में तुलु की वास्तविकता आ गई है।

तुलु परिवार मातृसत्तात्मक परिवार है। सिनेमा में शिवा की माँ एकल अभिभावक है। वह पूरे परिवार का ढाँचा संभालती है। 90 के दशक के तुलु परिवार ऐसा था जहाँ छोटे से बडी आपदा आने पर सबसे पहले दैवा की प्रर्थाना करके दैवा का प्रसाद (चंदन का टीका) माथे पर लगाया जाता है। सिनेमा में जब शिवा का साक्षात्कार पंर्जुली दैवा से होता है तो उसे बुखार आता है तब कमला भी दैवा की प्रर्थाना करके दैवा का प्रसाद शिवा के माथे पर लगाती है। कांतारा सिनेमा में तुलुवा लोगों का ड्रसिंग स्टाइल, उनका पसंदीदा पेय गोली सोडा, मिट्टी के बर्तन में मछली की कढी पखना आदि का यथावत चित्रण हुआ है। इस सिनेमा में जाति व्यवस्था का भी खंडन हुआ है। कांतारा सिनेमा मंगलूर कन्नड भाषा (जिस कन्नड भाषा में तुलु भाषा के शब्दों का ज्यादा प्रयोग होता हैं)में है। जैसे ऐसाभाष(बहुत बढिया),ऐबा (हरे बाब रे),ऐन्ता मारया(क्या आदमी है), दम्मया(क्षमा करो)आदि। इस सिनिमा में तुलु भाषा शैली का भी प्रयोग हुआ है। उदाहरण के तौर पर-इस सिनेमा का एक संवाद "दोड्डा जनरागे माडति गुरता इलवा ट्रेनिंग आदरे निंगाइतु शो एल्ला माडूद बेडा आइता"। तुलुनाडू के जनता की बात करने का शैली इसी तरह है। इस तरह ऋषभ शेट्टी ने कांतारा सिनेमा में तुलु संस्कृति के प्रत्येक पहलुओं को उजगार करने का प्रयास किया है, जो उभर के आया है। इसलिए यह सिनेमा तुलुवासियों का पसंदीदा सिनेमा है।

विशिष्ट सिनेमा वही होता है जिस में समाज का यर्थाथ चित्रण हो। समाज में स्थित समस्याओं का समाधान हो। कांतारा एक ऐसा फिल्म है जिस का प्रत्येक दृश्य में तुलु संस्कृति का अनावरण हुआ है। इस सिनेमा में तुलु संस्कृति के माध्यम से एकता का संदेश दिया है, जो समाज के लिए प्रेरणादायक है।

संदर्भ ग्रंथ:

१.रै, डा. विवेक (संपा), (2006),तुलु साहित्य चरित्रे, प्रसारंगा, कन्नड विश्वविद्यालय हंप्पी

२. विश्व स्नेह समाज पत्रिका, अंक 9, मार्च 2022

डॉ. ज्योति ज्ञानेश्वरी, प्रवक्ता, विश्वविद्यालय कालेज

हम्पनकट्टा, मंगलूर, कर्नाटक

Phone no: +918105292314, Jyothiputhran714@gmail.com